IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 5, Issue 3, June 2025
Impact Factor: 7.67

समसामयिक परिवेश में संत साहित्य की भूमिका

डॉ.पूनम श्रीवास्तव
सहायक आचार्य (हिंदी)
स. ब. पी. जी. कॉलेज बदलापुर, जौनपुर|

भूमिका-

वर्तमान समय में व्यवहारगत गिरावट महसूस की जा रही है, इस गिरावट से बचने ,उदात्त व्यक्तित्व का निर्माण करने में संत साहित्य वरदान सिद्ध होगा। संतों का व्यवहार लोक कल्याणकारी होता है। उनके जीवन से हमें एक सच्ची और अच्छी सीख मिलती है ।

संत तुलसीदासजी कहते हैं- संतों के हृदय में काम ,क्रोध, लोभ, मोह रूपी मनोविकार नहीं होता। उनका जीवन जप, तप ,व्रत और संयम से संयमित होता है। श्रद्धा, मैत्री ,प्रसन्नता ,दया आदि श्रेष्ठ गुण उनके हृदय में वास करते हैं। "संत हृदय नवनीत समाना" कहकर तुलसीदासजी ने संतों के हृदय की विशिष्टता का निरूपण किया है। आज का मानव अपने कर्तव्यों को तेजी से भूल रहा है। यही कारण है कि उसकी संवेदना सूखती जा रही है। सूखती हुई संवेदनाओं को सींचने के लिए हमें संतों का आचरण व्यवहार में लाने की आवश्यकता है, ताकि हम व्यवहारगत दृष्टि में सुधार ला सकें। ईर्ष्या आदि से मुक्ति पा सकें विशुद्ध हृदय से जीवन का आनन्द महसूस कर सकें इसके लिए हमें भगीरथ प्रयत्न करना होगा। संतों का जीवन उनका साहित्य हमें अपने अध्ययन, अध्यापन, व्याख्यान ,व्यवहार दैनिक चर्चा सभी में शामिल करना होगा। ऐसा करने से हम द्वंद्व संशय से बच सकेंगें । संत सत्य की खोज करने वाले तत्व वेत्ता होते हैं। उनकी चर्चा करने से,उनके जीवन चरित पढने से व्यक्तित्व में उदात्तता आना स्वाभाविक है ।संत कवियों को पढने से पता चलता है कि प्रेम, संगीत, विनय, आनन्द से इनका साहित्यसिक्त है। शुद्ध हृदय और जीवन अनुभूति सौंदर्य और प्रेम तथा सत्य को अभिव्यक्ति देकर समाज को गौरवान्वित करने का श्रेय संतों को ही है।

डा. बड़थ्वालजी के अनुसार "इनकी काव्य रचना सम्बन्धी सफलता के रूपात्मक प्रेम , संगीत, विनय तथा आनन्दोद्रेक में देखी जाती है क्योंकि उन्हीं में उनकी आंतरिक अनुभूति का पता चलता है। सौंदर्य , प्रेम एवं सत्य की त्रयी की अभिव्यक्ति भी इन्हीं रचनाओं में मिलती है।" [1]

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-27569